Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 5.69
ISSN No. 2456-1665

कमलेश्वर की कहानी *'दिल्ली में एक मौत'* में बदलते सामाजिक मुल्य

डॉ. बिक्कड अभिमन्यु सदाशिवराव
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
राष्ट्रमाता इंदिरा गांधी कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
जालना (महा)
मो.९४२१३०७७०६

कमलेश्वर एक जाने-माने कथाकार है । वे बहु प्रतिभा के धनी है । अपने विभिन्न कहानियों के द्वारा समाज में आ रहे बदलाव को वह प्रकट करते हैं । कहीं स्त्री विमर्श की बहस छेडते हैं तो कहीं दलित चेतना को उजागर करते है। अगडो-पिछडों को भी उन्होंने अपने कथा साहित्य में महत्त्व दिया है । कमलेश्वर मुलतः गाँव से जूडे इंसान है । परंतु लम्बे समय से वे महानगर में वास्तव्य में रहते हैं । इस कारण महानगरीय जीवनशैली को भी वे अपने कहानियों के माध्यम से अधोरेखित करते हैं । 'दिल्ली में एक मौत' एक ऐसी ही कहानी है जो आज मौत के बाद मातम बनाने का तरीका किस तरह बदल गया है । मौत को लेकर महानगरिय निवासी के मुल्यों में किस तरह गिरावट आ चुकी है । इसका वास्तव चित्रण प्रस्तुत कहानी में मिलता है ।

कहानी के केंद्र में दिवानचंद नामक व्यापारी के मौत को केंद्र में रखा गया है । यह दिल्ली के एक मशहूर व्यापारी है । जिसे लगभग पूरा दिल्ली शहर जानता है । मौत की खबर अखबारों के पहले पन्ने पर छपती है । तथा दाह संस्कार एक समय सूची को वर्तमानपत्र में ही बताया जाता है । दिसम्बर का महिना है और ठंड और कोहरे ने दिल्ली शहर को घेर रखा है । बहुत से चिर-परिचित लोगों के सामने यह सवाल खडा हो गया है । इस ठंड के कारण शवयात्रा में शामिल होना चाहिए या नहीं होना चाहिए । कमलेश्वर ने इस ठंड के बहाने यह बताने की कोशिश की है कि परिचित लोग सिर्फ ठंड होने के कारण शवयात्रा में सिरकत करने से बचने की कोशिश कर रहे है । यह एक महानगरिय बदलते हुए मनोवृत्ति को उजागर करता है । इस संदर्भ में सूर्यनारायण रणसुभे कहते है, " दिल्ली में एक मौत यह कहानी महानगरिय सभ्यता की कृत्रिमता, यांत्रिकता और संवेदनशून्यता को अधिक तीव्रता के साथ स्पष्ट करती है ।"[१]

कहानीकार दिवानचंद शेठ के मौत में सिरकत करनेवाले मनोदशा को इस तरह उजागर करते है कि मौत में जाने के लिए कपडे किस तरह होने चाहिए, बुट पॉलिश होने चाहिए, महिला अपने साडी का रंग दिखा रही है क्या यह जचेगी या नहीं, पावडर, लिपिस्टीक लगाया जा रहा है, जैसे कोई किसी पार्टी या विवाह में सिरकत करते हैं । इस कहानी का निवेदक याने स्वयं कहानीकार है । कस्बे के संस्कारों को लेकर आया हुआ यह निवेदक इस महानगरिय सभ्यता से आश्चर्यचकित हुआ है । कस्बे में अथवा देहातों में मृत्यु का समाचार मिला कि लोग सभी काम छोडकर तुरंत निकल आते है । परंतु महानगरों में घर से निकलते समय संपूर्ण तैयारी के साथ निकलते है । शवयात्रा हो या विवाह अथवा जन्मदिन का कार्यक्रम उनके लिए सब बराबर हैं । यहाँ लेखक सही मायने में सभ्यता, संस्कृति को सही मायने में कोई निभा रहा है तो वह है गाँव, कस्बे का आदमी । महानगर के लोगों के लिए सभी संस्कार एक जैसे ही लगते है । जिसे मौत भी अपवाद नहीं है । ''सामने बारजे पर मुझे मिसेज वासवानी दिखाई पडती है । उसके खूबसूरत चेहरे पर अजीब सी सफेदी है और होठों पर पिछली शाम की लिपस्टिक की हलकी लाली अभी भी मौजूद है । गाऊन पहने हुए ही वह निकलती है और अपना जूडा बॉध रही है । उनकी आवाज सुनाई पडती है, डार्लिंग जरा मुझे पेस्ट देना प्लीज ।''[२] वासवानी जी का परिवार और दिवानचंद का परिवार के विशेष सौहार्दपूर्ण रिश्ते रहे हैं । बावजूद भी वासवानी परिवार के सदस्यों में कोई भी दुखभाव नजर नहीं आता । एक परिवार में आये बदलते सामाजिक मुल्यों को महानगरिय परिप्रेक्ष्य में प्रकट करता है ।

कमलेश्वर शहरों में शवयात्रा का स्वरूप पूरी तरह किस कदर बदल गया है, इसे स्पष्ट करते हैं । पीछले ही वर्ष दिवानचंद की बेटी का विवाह संपन्न हुआ था । विवाहों में लोगों ने हजारों की भिड की थी । लेकिन आज स्वयं उनके मौत में महज सात लोग शामिल है । बाकी सभी लोग अपने-अपने कारों से स्मशानभूमि में चल पडे है । लेखक इस प्रसंग को इस प्रकार बयान करते है, '' चार आदमी कंधा दिए हुए है और सात आदमी साथ चल रहे हैं । सातवा मैं ही हूँ और मैं सोच रहा हूँ कि आमदी के मरते ही कितना फर्क पडता है । पीछले साल ही दिवानचंद ने अपनी लडकी की शादी की थी तो हजारों की भीड थी । कोठी के बाहर कारों की लाईन लगी थी ।''[३]प्रस्तुत प्रसंग से स्पष्ट होता है कि लोग किसी भी तरह का कृतज्ञता अपनाने के लिए तैयार नहीं है । रातो रात सब भूल जाते हैं । लेखक इस बदलाव को नये अंदाज में पेश करते है ।

कहानीकार कमलेश्वर स्मशानभूमि के बदलते स्वरूप को उजागर करते हैं । स्मशानभूमि में लोग आपस में हाय, हॅलो कर रहे है । कोई मोबाईल पर बात कर रहा है तो कोई सीगारेट का धूआँ उडा रहा है । महिलाएँ भी अपनी जानी पहचान महिलाओं के साथ ठहाके लगा रही है और किसी बिती पार्टी में कैसी मौज मस्ती की थी । उसका जिक्र कर रहे है । स्मशानभूमि में दाह संस्कार विधि के अंतिम समय पर दर्शन लेते वक्त कुछ महिलाएँ शोक मनाने का अभिनय कर रही है । लेकिन वह भी उनसे ठिक नही हो रहा है । जब अंदर से ही कुछ भाव नहीं है तो बाहरी दिखावा समझ में आता है । लेखक इस दिखावे को अपने शब्दों में कैद करते है, " शव का मुँह खोल दिया गया है और अब औरतें फूल और मालाएँ उसके इर्द-गिर्द रखती जा रही है । शोफर खाली होकर अब कारों के पास खडे सीगरेट पी रहे है । एक महिला माला रखकर कोट की जेब से रूमाल निकालती है और आँखों पर रखकर नाक सुरसुराने लगती है और पीछे हट जाती है, और अब सभी औरतों ने रूमाल निकाल लिए है और उनकी नाकों से आवाजें आ रही है ।"[४] प्रस्तुत प्रसंग से यह स्पष्ट होता है कि महानगरिय लोगों को अपने ही परिजनों के प्रति कोई लगाव नहीं रहा है । यहाँ तक की रोने का भी बहाना करना पडता है और अपना बहाना पकडा ना जाए इसलिए रूमालों से मुँह छूपाना पडता है । यह हालत महानगरिय जन जीवन की हो चूकी है । जहाँ मनुष्य लगभग अपनी संवेदना खो बैठा है । इस तरह सामाजिक मुल्यों की गिरावट या फिर महानगरिय मुल्यों का निर्माण किस तरह हो रहा है । इस ओर लेखक समाज का ध्यान आकर्षित करना चाहते है ।

संक्षेप में महानगरों में चाहे दिल्ली हो, या दिल्ली जैसे अन्य महानगर । वहाँ सामाजिक मुल्य लगभग नष्ट होने के कगार पर है । गाँव से जुडा व्यक्ति जो कभी इन सभी संस्कारों का सही ढंग से वहन करता था, वह भी आज महानगर में आकर गाँव के संस्कारों से भटक गया है । यह सही है कि महानगरों में जीवन यापन करते समय बहुत ही भागम भाग करनी पडती है । यहाँ पैसा ही सबकुछ है । भौतिक साधनों को ही सबकुछ माना जाता है । जहाँ इनसान अपनी इंसानियत खो रहा है । इस संदर्भ में सूर्यनारायण रणसूभे कहते है, " बौद्धिकता के कारण यांत्रिकता का प्रवेश जिंदगी के हर क्षेत्र में हो रहा है । प्रत्येक प्रसंग और घटना को लेकर निश्चित सूत्र बनाये जा रहे है । परिणामत: सभी ओर घोर यांत्रिकता के दर्शन हो रहे है । किसी भी प्रकार की दुर्घटना हुई हो तो भी व्यक्ति अपने दैनंदिन व्यवहार के प्रति सर्वाधिक सजग होकर सोचता है । विशाल फैले हुए शहरों के कारण उसे यह संभव नहीं की पहले वह स्मशान चले जाएँ ।"[५] अत: प्रस्तुत कहानी बदलते सामाजिक मुल्ये के परिप्रेक्ष्य में यह

कहानी शहरी जीवन की कठोर यथार्थता को प्रकट करती है । जिसे लेखक ने व्यंग्य के माध्यम से कडा प्रहार किया है ।

संदर्भ

1. कहानीकार कमलेश्वर संदर्भ और प्रकृति, सूर्यनारायण रणसुभे, विकास प्रकाशन, कानपुर, २०११,पृ.५९
2. समग्र कहानियाँ, कमलेश्वर, राजपाल प्रकाशन,२०१०,पृ.३८५
3. वही, पृ.३८८
4. वही, पृ.३८८
5. कहानीकार कमलेश्वर संदर्भ और प्रकृति, सूर्यनारायण रणसुभे, विकास प्रकाशन, कानपुर, २०११, पृ.६३